2 मई 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सच्चा आत्मार्थी ही वास्तविक विद्वान होता है और जिनवाणी का जानकार विद्वान ही सच्चा आत्मार्थी हो सकता है।

ह्न परमभाव प्र.नयचक्र, पृष्ठ-182

वर्ष : 33, अंक : 3 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

नागपुर में डॉ. भारिल्ल को 'श्रुत संवर्द्धक' उपाधि

नागपुर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 7 व 8 अप्रैल को इतवारी स्थित श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मण्डल के तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह अत्यंत आनन्द एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर दिनाँक 7 व 8 अप्रैल को दोनों समय डॉ. भारिल्ल के **मैं स्वयं भगवान हूँ, अपने में अपनापन और आत्मा की खोज** विषयों पर अत्यंत सारगर्भित मार्मिक प्रवचन हुये।

दिनाँक 8 अप्रैल को सायंकाल शुक्रवारी तालाब स्थित राजवाड़ा पैलेस में हीरक जयंती महोत्सव के कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस) के सरसंघसंचालक डॉ. मोहनजी भागवत** मंचासीन थे।

कार्यक्रम प्रारंभ होने के पूर्व डॉ. भारिल्ल का **णमोकार महामंत्र** विषय पर अत्यंत सारगर्भित एवं मार्मिक प्रवचन हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल का सर्वांगीण परिचय दिया एवं उनकी कार्यशैली के साथ-साथ उनके कार्य को देखकर विविध मुनिराजों व मनीषीयों द्वारा कही गयी बातों की ओर ध्यानाकर्षित किया।

तदुपरांत डॉ.भारिल्ल की सम्मान श्रंखला को आयोजित करते हुए नागपुर एवं आसपास की लगभग ४२ प्रमुख संस्थाओं ने शॉल, श्रीफल, तिलक, माल्यार्पण करके व प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मान किया, जिनमें जैन सेवा मण्डल, श्री दि.जैन महासमिति, श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट काटोल, श्री वासुपूज्य दि.जैन चैत्यालय प्रतापनगर, श्री तारण-तरण दि.जैन चैत्यालय नागपुर एवं रामटेक, श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल कारंजा, श्री श्रीमती कुंकुबाई जैन श्राविकाश्रम कारंजा, श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति कारंजा, शची सखी मण्डल, श्री सैतवाल जैन संगठन मण्डल महावीर नगर, श्री सन्मति जैन ट्रस्ट फण्ड, श्री महाराष्ट्र तत्त्वप्रचार-प्रसार समिति, श्री परमानंद दि. जैन धर्मशाला, जैन क्लब, जैन सोशल ग्रुप, भारतीय जैन संघटना, महावीर इन्टरनेशनल, ज्वाईंट जैन ग्रुप, श्री ओसवाल पंचायती संस्था इतवारी, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा, विदर्भ सेवा समिति, जैन इन्टरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन, लायन्स क्लब, रोटरी क्लब आदि प्रमुख थे।

नागपुर मण्डल की ओर से प्रदान किये गये विशेष प्रशस्ति-पत्र का वाचन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री प्रियदर्शनजी जैन ने किया।

सम्मानोपरांत प्रमुख अतिथि न्यायमूर्ति श्री श्रीषेणजी डोणगांवकर एवं श्री राकेशजी जैन का उद्बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने डॉ. भारिल्ल के कार्य की महती प्रशंसा करते हुए कहा कि **'डॉ. भारिल्ल ने अपनी वाणी, लेखनी एवं साहित्य द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि तत्त्वज्ञान की कठिन से कठिन बात को भी वे अत्यंत सहज ढंग से लोगों के हृदय में उतार सकते हैं, इसके लिये उनका जितना भी सम्मान किया जाए, वह सागर में बूंद के समान है।'**

इसके पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख सरसंघसंचालक डॉ. मोहनजी भागवत** ने अपने उद्बोधन में कहा कि **'डॉ. भारिल्ल जैसी महान हस्तियों का सम्मान होता है, तो ऐसे सम्मान से सम्मानित वह समाज होती है, जो ऐसे सम्मान को व्यक्त करती है। आज डॉ. भारिल्ल ने चरमोत्कर्ष स्थिति को प्राप्त किया है; ऐसे शिखर पर विराजमान होने के बाद भी उनमें अहंभाव रंचमात्र भी दिखाई नहीं देता। कुछ लोग थोड़े से सम्मान से फूले नहीं समाते; किन्तु डॉ. भारिल्ल का इतना सम्मान होने पर भी उनका सहज व्यक्तित्व इस सम्मान से कई गुना आगे है। उन्होंने कहा कि व्याकरण आदि में उलझाने वाले पण्डित तो बहुत देखे हैं; परन्तु णमोकार मंत्र जैसे विषय पर इतनी सरल भाषा में अधिकृत जानकारी, अधिकृत वक्ता से सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।** अन्त में दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुये उनकी ज्ञानाराधना की प्रशंसा की।'

इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल के समक्ष उनके विद्यार्थियों पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी, पण्डित धवलजी गांधी, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित पंकजजी दहातोंडे ने प्रतिज्ञा की कि डॉ. भारिल्ल (शेष पृष्ठ 3 पर ...)

सम्पादकीय – 34

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–४९

विगत गाथा में यह कहा था कि यदि ज्ञानी (आत्मा) और ज्ञान सदा परस्पर भिन्न पदार्थ हों तो दोनों को अचेतनपने का प्रसंग प्राप्त होगा।

अब प्रस्तुत गाथा में आत्मा और ज्ञान में समवाय सम्बन्ध का निराकरण करके यह कहते हैं कि वह आत्मवस्तु ज्ञान के समवाय से ज्ञानी नहीं है, आत्मा और ज्ञान में समवाय सम्बन्ध नहीं; अपितु तादात्म्य सम्बन्ध है, दोनों एक ही हैं।

मूलगाथा इस प्रकार है –

ण हि सो समवायादो अत्थंतरिदो दु णाणदो णाणी।
अण्णाणीत्ति य वयणं एगत्तपसाधगं होदि।।४९।।

(हरिगीत)

पृथक् चेतन ज्ञान के समवाय से ज्ञानी बने।
यह मान्यता नैयायिकी जो युक्तिसंगत है नहीं।।49।।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि ज्ञान से अर्थान्तरभूत आत्मा अर्थात् ज्ञान से भिन्न आत्मा ज्ञान के समवाय से ज्ञानी बनता है – ऐसी नैयायिकों की मान्यता यथार्थ नहीं है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यदि कोई ऐसा कहे कि ज्ञान से अर्थान्तरभूत आत्मा अर्थात् ज्ञान से पृथक् आत्मा ज्ञान के समवाय से ज्ञानी होता है, उसका ऐसा कथन वास्तव में योग्य नहीं है; क्योंकि ऐसी मान्यता वालों से हमारा प्रश्न यह है कि वह आत्मा ज्ञान का समवाय होने से पहले ज्ञानी था या अज्ञानी ? यदि समवाय से पहले आत्मा ज्ञानी था, तो ज्ञान का समवाय निष्फल है और यदि वह अज्ञानी था तो उससे पूछते हैं कि अज्ञान के समवाय से अज्ञानी था या अज्ञान के साथ एकत्व से अज्ञानी था ? प्रथम – यदि अज्ञान के समवाय संबंध से अज्ञानी था, तो ज्ञानी के अज्ञान के समवाय का अभाव होने से ही समवाय ही नहीं रहा; इसलिए अज्ञानी ऐसा वचन अज्ञान के साथ एकत्व को ही सिद्ध करता है और अज्ञान के साथ एकत्व सिद्ध होने पर ज्ञान के साथ एकत्व सिद्ध क्यों नहीं हो सकता ? यदि हो सकता है तो समवाय सम्बन्ध मानने की आवश्यकता ही नहीं है।

आचार्य जयसेन ने उन्हीं तर्कों से नैयायिक मत के समवाय सम्बन्ध का निराकरण किया है, जो तर्क आचार्य अमृतचन्द्र ने दिये – ज्ञान व ज्ञानी में तो ज्ञानी व ज्ञानगुण में प्रदेश रहित एकता है और यदि नैयायिक यह कहें कि एकता नहीं है। जयसेनाचार्य के कहने का तात्पर्य यह है कि यदि ज्ञान से ज्ञानी पृथक् है, तो ज्ञानगुण का सम्बन्ध ज्ञानी के था या नहीं, ज्ञानी उसके पहले ज्ञानी था या अज्ञानी ? यदि कहोगे कि ज्ञानी था, तो नवीन ज्ञानगुण का कोई प्रयोजन नहीं; वह अज्ञान गुण के संयोग से अज्ञानी था या अज्ञान गुण से एकमेक था ? यदि कहोगे कि अज्ञानगुण के सम्बन्ध से पहले भी अज्ञानी था, तो कहेंगे कि जब पहले से ही अज्ञानी था तो फिर अज्ञान सम्बन्ध निरर्थक कहे, उससे कोई प्रयोजन नहीं, स्वभाव से ही अज्ञानी ठहरता है।

इन सब कथनों से यह सिद्ध हुआ कि यदि ज्ञानगुण का प्रदेशभेद रहित ज्ञानी से एक भाव माना जाय तो आत्मा के अज्ञानगुण एक भाव होते हुए अज्ञानी पद ठहरता है। इसप्रकार ज्ञान व ज्ञानी में अनादि–अनन्त एकता है।

जैसे सूर्य मेघपटल द्वारा आच्छादित होने पर प्रभारहित कहा जाता है; परन्तु उस प्रभाव से सूर्य अपने स्वभाव से त्रिकाल पृथक् नहीं हो जाता; पटल की औपाधिक प्रभा से हीनाधिक कहा जाता है, वैसे ही यह आत्मा अनादि पुद्गल की उपाधि के सम्बन्ध से अज्ञानी प्रवर्तित हुआ है; परन्तु वह आत्मा अपने स्वाभाविक अखण्ड केवलज्ञान स्वभाव से किसी काल में भी पृथक नहीं होता। कर्म की उपाधि से ज्ञान की हीनाधिकता कही जाती है; इसलिये निश्चय से ज्ञानी से ज्ञानगुण पृथक् नहीं है; कर्म की उपाधि से अज्ञानी कहा जाता है।

कवि हीरानन्दजी उपर्युक्त भाव का स्पष्टीकरण अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं। वे कहते हैं –

(दोहा)

ग्यानी ग्यान जुदा नहीं, ग्यान नहिं समवाय।
अग्यानी इति वचन हैं, एकरूप प्रगटाय।।२५८।।

(सवैया इकतीसा)

ग्यान समवाय थकी ग्यानी नाम पावै जीव,
समवाय बिना भेद, ग्यानी के अग्यानी है।
जौ पै ग्यानी नाम तौ पै ग्यान समवाय वृथा,
अज्ञानी कहावै तौ लौं झूठी सी कहानी है।।
ग्यानी के अग्यान समवाय होतैं ग्यानी नहीं,
अग्यानी अग्यान तातैं एकता बखानी है।
ऐसा जान ग्यान से ही ग्यानी कौं अनन्य साधै,
सोइ समकिति जीव मोक्ष का निदानी है।।२५९।।

(दोहा)

दरव और गुन और है, और कहत समवाय।
नैयायिकमत मानतैं वस्तुरूप नसि जाय।।२६०।।
जुदी वस्तु जो एक ही, है संयोग संबंध।
सो समवाय कहावतै, जावत नहिं जात्यन्ध।।२६१।।

कवि कहता है कि – यदि समवाय सम्बन्ध से जीव ज्ञानी नाम पाता है, तो समवाय सम्बन्ध के पहले जीव ज्ञानी था या अज्ञानी ?

यदि समवाय के पहले भी ज्ञानी था, तो फिर ज्ञान का समवाय सम्बन्ध होना व्यर्थ है और अज्ञानी कहना तो मिथ्या कल्पना ही है।

इस गाथा का अर्थ करते हुए गुरुदेव श्रीकानजी स्वामी कहते हैं कि 'आत्मा व ज्ञान गुण में प्रदेशभेद रहित एकता है। आत्मा असंख्यात प्रदेशी है तथा गुणों के प्रदेश गुणी से जुदे नहीं है। जो जीव शरीर से धर्म होना मानते हैं अर्थात् शरीर को धर्म का साधन मानते हैं, उन्होंने ज्ञान को आत्मा से जुदा माना; गुण व गुणी को एक नहीं माना। उन्हें अपने धर्म के लिए बाहर में शोध करनी पड़ेगी; किन्तु सत्य वस्तु का स्वरूप ऐसा नहीं है। धर्म तो स्वयं में से ही होता है।

श्री कानजीस्वामी ने वही सब तर्क प्रस्तुत किए हैं, जो आचार्य अमृतचन्द्र एवं आचार्य जयसेन स्वामी ने दिये हैं; परन्तु कुछ मान्यताओं का जिक्र करते हुए भी कानजीस्वामी उन दृष्टान्तों द्वारा सिद्धान्त को समझाते हैं। वे कहते हैं कि दृष्टान्त एकदेश (आंशिक) घटता है, सर्वदेश नहीं घटता।

अन्यमतवालों की चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि एक सम्प्रदाय ऐसा मानता है कि केवलज्ञान तो सब में प्रगट ही है, संसारी जीवों में बादलों में ढके जाज्वल्यमान सूर्य की भाँति ढका रहने से हम उसे जान नहीं पाते।

दूसरा सम्प्रदाय ऐसा मानता है कि जैसे 'राख के अन्दर आग है; पर राख के कारण हमें दिखाई नहीं देती। उसका प्रभाव राख से ढका हुआ है। राख हटाने पर जैसे आग को देख सकते हैं, वैसे ही कर्मरज या राख हटाने पर आत्मा में व्यक्त केवलज्ञान देखा जा सकता है। इसलिए हमें कर्मरूपी राख हटाने का प्रयत्न करना चाहिए।'

उनका समाधान करते हुए कहा है कि - वस्तुस्वरूप ऐसा नहीं है। केवलज्ञान प्रगटरूप नहीं है; किन्तु शक्ति रूप है। जो यह कहता है कि केवलज्ञान पर कर्मों का आवरण है। जैसे बादल सूर्य को ढक लेते हैं, ऐसा ही कर्मों ने केवलज्ञान ढक लिया है। यह मान्यता भी खोटी है; क्योंकि कर्म तो जड़ हैं, वे आत्मा के केवलज्ञान को रोक नहीं सकते। अरे! जब आत्मा स्वयं में एक अन्तमुर्हूर्त को एकाग्र होता है तो केवलज्ञान स्वयं प्रगट हो जाता है और कर्म स्वयं टल जाते हैं।

कर्म टले तो केवलज्ञान हो, ऐसा मानना मिथ्या है; क्योंकि ऐसा मानने वाले आत्मा से केवलज्ञान होना नहीं मानते।

इसप्रकार गुरुदेवश्री ने अनेक तर्क और युक्तियों से अन्यमत की मिथ्या मान्यताओं का निराकरण करके केवलज्ञान के यथार्थ स्वरूप का एवं उसके प्रगट होने की यथार्थ विधि का प्रतिपादन किया। तत्त्वार्थसूत्र के नवें अध्याय के २७ वें सूत्र में स्पष्ट कहा है कि -

''उत्तम संहननस्यैकाग्र चिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्''

उत्तम संहनन वाले मुनिराजों के लगातार एक अन्तमुहूर्त तक आत्मा के स्वरूप में लीन होने से आठों कर्मों का अभाव होकर केवलज्ञान प्रगट हो जाता है। हम भी सम्यक्मार्ग के अनुसरण से इस दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। ●

खामगाँव में हीरक जयन्ती

खामगाँव (महा.) : यहाँ दिनाँक 9 अप्रैल, 2010 को महावीर भवन में ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर सकल जैन समाज एवं मलकापुर दि. जैनधर्म व समाज विकास ट्रस्ट की ओर से अध्यक्ष श्री नितिनजी वैद्य, कार्याध्यक्ष श्री राजकुमारजी चवरे, सचिव श्री प्रवीणजी जैन एवं समस्त ट्रस्ट मण्डल ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल, चंदन की माला एवं अभिनन्दन-पत्र देकर सम्मान किया।

कार्यक्रम में मलकापुर समाज ट्रस्ट, श्री वीतराग कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु मण्डल एवं पंचपरमेष्ठी भक्त मंडल की ओर से श्री वी. डी. पोरवाड ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। इनके अतिरिक्त दि. जैन समाज, तारणतरण समाज, श्वेताम्बर समाज, स्थानकवासी समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी विशेषरूप से उपस्थित होकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

मलकापुर से आये 40-50 लोगों के अतिरिक्त वाशिम, नांदुरा, मोलसा आदि स्थानों से भी साधर्मियों ने पधारकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया एवं उनकी दीर्घायु की कामना की।

इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की सफलता में श्री राजेन्द्रजी बड़जात्या, श्री विमलजी कासलीवाल, श्री भीकमचंदजी जैन, श्री वीरेन्द्रजी जैन, अध्यक्ष श्री अजयजी गोधा आदि अनेक लोगों का सराहनीय सहयोग रहा।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

से आशीर्वाद ग्रहण करते हुये हम सभी उनके समान जीवन की अन्तिम सांस तक जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहेंगे।

इस अवसर पर **श्री मोहनजी भागवत** द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुये सकल दि.जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल को **'श्रुतसंवर्धक'** की उपाधि से अलंकृत किया। इसी क्रम में सौ. प्रेमलता मोदी एवं विद्याबाई जैन ने तिलक लगाकर, डॉ. शकुन जैन ने माल्यार्पण करके एवं सौ. सुनीता जैन ने श्रीफल प्रदान कर श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत किया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों की प्रशंसा करते हुये कोलारस से प्रारंभ हुए इस उत्सव की घटना के अनेक संस्मरण सुनाते हुये कहा कि यह मेरा सम्मान नहीं; अपितु जिनवाणी का सम्मान है।

दिनाँक ७ अप्रैल को श्रमिक पत्रकार संघ द्वारा आयोजित 'मीट द प्रेस' कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल का लगभग ४० पत्रकारों ने सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक एवं वर्तमान गतिविधियों पर इन्टरव्यू लिया, जिसमें डॉ. भारिल्ल ने सभी प्रश्नों का सटीक एवं सुदृढ समाधान किया।

कार्यक्रम का संचालन युवा फैडरेशन के अध्यक्ष पण्डित विपिनजी शास्त्री ने किया। ●

बाँसवाड़ा में व्याख्यान एवं हीरक जयंती

बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ गाँधी मूर्ति स्थित पृथ्वी क्लब में दिनाँक 25 अप्रैल को अहिंसा प्रचार–प्रसार समिति के तत्त्वावधान में हिन्दू–मुस्लिम आदि सकल समाज के लिये विशालस्तर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अहिंसा विषय पर व्याख्यान एवं हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

राजस्थान में पहली बार इसप्रकार सकल समाज के लिये रखे गये व्याख्यान कार्यक्रम में सकल समाजों से विविध संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित लगभग 900 से 1000 लोगों ने धर्मलाभ लिया। विशेष बात यह है कि डॉ. भारिल्ल के अहिंसा विषय से प्रभावित होकर मुस्लिम समाज के अनेक लोगों ने मंच पर उपस्थित होकर आजीवन हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ली तथा अपने स्वयं के बैनरतले डॉ. भारिल्ल का व्याख्यान कराने की बात कही।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अमजद हुसैन (उप सभापति नगरपालिका बांसवाड़ा), श्री महीपालजी ज्ञायक एवं श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रचार समिति के सदस्य श्री कांतिलालजी पंचाल, उपजिला प्रमुख श्री शांतिलालजी सेठ, श्री विनोदजी अग्रवाल, श्री नरेन्द्रजी चौरड़िया, श्री मुकेशजी जैन, श्री भालचंदजी दवे, श्री हर्षजी कोठारी, श्री सुमतिलालजी लुणदिया, श्री अभिषेकजी जैन, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री एवं जाहिद अहमद ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण करके, शॉल ओढाकर, पगड़ी पहिनाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया।

इस प्रसंग पर बांसवाड़ा एवं आस–पास के क्षेत्रों में रह रहे डॉ. भारिल्ल के शिष्यों में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित रितेशजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री, पण्डित निमेशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित मोहितजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी शास्त्री, पण्डित भरतजी शाह, पण्डित धर्मेशजी शास्त्री आदि ने भी अपने गुरु का माल्यार्पणकर भावभीना सम्मान करते हुये आजीवन तत्त्वप्रचार–प्रसार करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में नगर के प्रबुद्ध नागरिक श्री शम्भूलालजी हिरण (अध्यक्ष–चैम्बर ऑफ कॉमर्स), श्री नाथूलालजी हरिजन (पार्षद), पण्डित राकेशजी शास्त्री (व्याख्याता–राज.महाविद्यालय), श्री बसंतचंद्रजी जोशी आदि भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि इस प्रसंग पर श्री महीपालजी ज्ञायक परिवार की ओर से आस–पास के गाँवों से पधारे सभी मुमुक्षु साधर्मियों के लिये ध्रुवधाम में भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई थी।

समस्त कार्यक्रम प्रो.आई.वी.त्रिवेदी (डीन, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) व प्रो. एन. के. मेहता के निर्देशन तथा श्रीमती निर्मला चेलावत व सुश्री सरोज नागावत के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. ममता जैन ने किया।

समागत समाज को दिनांक 24 अप्रैल को ध्रुवधाम–बांसवाड़ा में डॉ. भारिल्ल के समयसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

रतलाम में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक २५ अप्रैल को रात्रि में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। समारोह से पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

इस अवसर पर आयोजित हीरक जयन्ती समारोह की अध्यक्षता श्री हिम्मतजी कोठारी (पूर्व गृहमंत्री, म.प्र.) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयकुमारजी 'जलज' तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर तथा फैडरेशन के राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ नन्ही बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ श्री हुकमचंदजी छाबड़ा, श्री जम्बूकुमारजी पाटोदी, श्री निर्मलजी गोधा, श्री चंद्रप्रकाशजी मोठिया, श्री अरुणजी चपलोत, श्री अजयजी दोशी एवं श्री पंकजजी बिलाला ने डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल आदि भेंटकर सम्मानित किया।

श्री हिम्मतजी कोठारी (पूर्व गृहमंत्री), डॉ. जयकुमारजी जलज, श्री आनंदकुमारजी अजमेरा, श्री प्रमोदजी पाटनी, श्री कान्तिलालजी बड़जात्या, श्री मानमलजी अग्रवाल एवं श्री राजकुमारजी अजमेरा ने डॉ. भारिल्ल को अभिनन्दन–पत्र भेंट कर उनके यशस्वी जीवन की मंगलकामना की। अभिनन्दन–पत्र का वाचन श्री जयन्तजी जैन ने किया।

इसके अतिरिक्त सकल जैन समाज के श्री रंगलालजी चौरड़िया, श्री पूनमचंदजी कोठारी, श्री विनोदकुमारजी मुणत, श्री भंवरलालजी पुंगलिया, श्री मगनलालजी रूनवाल, श्री महेन्द्रकुमारजी बोथरा, श्री आजादजी मेहता, श्री हीरालालजी पाटोदी, डॉ. सुरेन्द्रजी जैन, श्री हरकचंदजी सांवला आदि अनेक गणमान्य लोगों ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम के **अध्यक्ष** पूर्व गृहमंत्री कोठारीजी ने अपने भाषण में कहा कि **मैं डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से बहुत प्रभावित हूँ, इनकी आकर्षक, तार्किक व सरल प्रवचन शैली जैनधर्म के सिद्धांतों को समझने में अत्यधिक सहायक होती है।**

संचालन श्री राजकुमारजी अजमेरा तथा आभार प्रदर्शन श्री कीर्ति बड़जात्या द्वारा किया गया।

अकोला में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

अकोला (महा.) : यहाँ संघवीवाड़ी में दिनाँक 11 अप्रैल को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

रात्रि 8 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में श्री माणिकचंदजी झांझरी, श्री नवलचंदजी कोटेचा एवं श्री ललितभाई वोरा ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पणकर अभिनन्दन किया। इसके पश्चात् अकोला की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

इस अवसर पर शांतादेवी बिलाला, नीलम पाटनी, वन्दना अजमेरा एवं ज्योति प्रमोद झांझरी ने श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल को शॉल व श्रीफल प्रदानकर सम्मानित किया।

सम्मान समारोह के पूर्व उपस्थित विशाल जनसमुदाय के बीच डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर अत्यंत मार्मिक व्याख्यान हुआ।

मङ्गलाचरण श्री अक्षयजी बाकलीवाल ने तथा संयोजन श्री सुभाषजी अजमेरा ने किया।

जबलपुर में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा में दिनाँक 13 व 14 अप्रैल को आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग-विज्ञान मंडल एवं अ.भा. दि.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह मनाया गया।

दिनाँक 14 अप्रैल को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ईश्वरदासजी रोहाणी (अध्यक्ष-मध्यप्रदेश विधानसभा)ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रभासजी साहू (महापौर-नगरनिगम, जबलपुर) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शरदजी जैन (विधायक-उत्तर मध्यक्षेत्र जबलपुर), श्री निर्मलचंदजी भूरा (अध्यक्ष-जैन श्वेताम्बर संघ जबलपुर), श्री भगवतीधरजी वाजपेई (अध्यक्ष-चेम्बर ऑफ कॉमर्स, जबलपुर), श्रीमती सुषमा जैन (सदस्य-महिला आयोग), श्री डी.सी.जैन (चेयरमैन-ज्ञानगंगा ग्रुप), डॉ. जितेन्द्रजी जामदार (वरिष्ठ चिकित्सक एवं समाजसेवी), श्री अजितजी जैन (सहायक महाप्रबंधक-भारतीय स्टेट बैंक आंचलिक कार्यालय) आदि महानुभाव मंचासीन थे।

समारोह में आचार्य कुन्दकुन्द दि.जैन वीतराग-विज्ञान मंडल एवं अ.भा.दि.जैन युवा फैडरेशन के अतिरिक्त नगर व आसपास की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे। सभी ने डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल व अभिनन्दन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान मंडल का परिचय श्री अशोकजी जैन ने एवं युवा फैडरेशन का परिचय श्री मनोजजी जैन ने दिया। डॉ. भारिल्ल का परिचय एवं उनके आध्यात्मिक जगत के योगदान पर पण्डित विरागजी शास्त्री ने प्रकाश डाला। अभिनन्दन-पत्र का वांचन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये कहा कि **विदेशों के होटलों में शाकाहारी भोजन प्राप्ति का श्रेय डॉ. भारिल्ल को ही जाता है। उन्होंने अपने आप को डॉ. भारिल्ल का शिष्य बताते हुये अहिंसा व शाकाहार पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार करने का आश्वासन दिया।**

समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल द्वारा णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का मङ्गलाचरण श्री श्रेणिकजी जैन ने तथा संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री एवं डॉ.श्रेयांसजी शास्त्री द्वारा किया गया। **- संजय जैन**

कवि सम्मेलन हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जयंती के अवसर पर दिनाँक 14 मई, 2010 को एक कवि सम्मेलन का आयोजन देवलाली (नासिक) में किया जा रहा है। यह कवि सम्मेलन गुरुदेवश्री के जीवन/व्यक्तित्व/कर्तृत्व पर केन्द्रित रहेगा। इसमें कविता पाठ करने के इच्छुक कवि अपनी कविताएँ/प्रविष्टियाँ पण्डित पीयूषजी शास्त्री को श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 के पते पर प्रेषित करें एवं फोन : 0141-2707458, 2705581 पर सम्पर्क करें।

- कांतिभाई मोटानी, मुम्बई

सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में विद्वत गोष्ठी संपन्न

मुक्तागिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 31 मार्च से 4 अप्रैल तक द्वितीय विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी का उद्देश्य विद्वानों का पारस्परिक मिलन और जिनागम के गूढ़ सिद्धांतों पर पारस्परिक चर्चा था।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. हेमचंदजी देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, श्री भरतभाई शेठ राजकोट, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, श्री हितेशभाई चौवटिया मुम्बई, पण्डित ऋषभजी जैन इन्दौर, पण्डित सुदीपजी बीना ने निर्धारित विषयों पर गहन चर्चा की।

गोष्ठी का मुख्य विषय स्व-पर प्रकाशक था। इस विषय पर चर्चा के लिये पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने गुरुदेवश्री के प्रवचनों में से 14 बिन्दु तैयार किये थे।

इस गोष्ठी में श्री अनंतराय ए.शेठ मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, ब्र. बसंतभाई दोशी, श्री रमेशजी भंडारी बैंगलोर विशेष रूप से उपस्थित थे। इस गोष्ठी में तत्त्वप्रचार के लिये नवीन प्रयासों और ठोस योजनाओं पर भी चर्चा की गई। श्री अनंतराय ए. शेठ ने गोष्ठी के प्रारूप की सराहना करते हुये निरंतर ऐसे आयोजनों को करने के लिये संकल्प व्यक्त किया। डॉ. भारिल्ल ने वीतरागी तत्त्व के प्रचार-प्रसार के लिये सहर्ष सदैव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस गोष्ठी में लगभग 100 विशिष्ट अतिथियों एवं साधर्मियों ने 32 विद्वानों का लाभ लिया। इस गोष्ठी में उपस्थित विद्वानों एवं श्रोताओं को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का विशेष मार्गदर्शन मिला।

कारंजा में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

कारंजा (महा.) : यहाँ शेनगण दि. जैन मंदिर में दिनाँक 4 अप्रैल को तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर दि.जैन शेनगण मंदिर की ओर से श्री देवासावजी चवरे, बालात्कार दि.जैन मंदिर की ओर से श्री मनोहरजी डाखारे, काष्टासंघज दि. जैन मंदिरकी ओर से श्री अविनाशजी दयीपूरकर, श्री महावीर ब्र. आश्रम की ओर से श्री भरतभाऊ भोरे, गुरुकुल सेवा मंडल की ओर से श्री जयंतकुमारजी भिसीकर, श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति की ओर से श्री उद्धर अशोकजी चवरे, जैन महिला मण्डल की ओर से सौ. शुभांगी दोंडगाँवकर आदि महानुभावों ने शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह मेरा सम्मान नहीं है; अपितु जिनवाणी का ही सम्मान है। कार्यक्रम का संचालन श्री अमल राजकुमारजी चवरे ने किया।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

51 तेरहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मोक्षमार्गप्रकाशक के छह अधिकारों में अब तक जो चर्चा हुई; उसका संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है –

प्रथम अधिकार में मंगलाचरण के उपरान्त ग्रन्थ का स्वरूप, ग्रन्थ की प्रामाणिकता, पंचपरमेष्ठी का स्वरूप, बांचने-सुनने योग्य शास्त्र, वक्ता-श्रोता का स्वरूप आदि विषयों की चर्चा की गई है।

दूसरे अधिकार में जिसप्रकार वैद्य बीमारी का निदान करता है; उसीप्रकार संसारी जीव की मूल बीमारी क्या है ? – इसका निदान किया गया। इसमें कर्मबंधन का निदान, नवीन बंध विचार, सत्तारूप कर्मों की अवस्था, कर्मों की उदयरूप अवस्था का वर्णन किया गया है और कर्म बंधनरूप रोग के निमित्त से होनेवाली जीव की अवस्था बताई गई है।

तीसरे अधिकार में संसार के दु:ख, उनका मूल कारण – कर्मों की अपेक्षा और गतियों की अपेक्षा से बताया गया है। इसी संदर्भ में चार प्रकार की इच्छाओं का निरूपण भी किया गया है। अन्त में मोक्षसुख और उसके प्राप्ति के उपाय की चर्चा है।

चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्या-चारित्र का निरूपण है। अगृहीत अर्थात् अनादिकालीन। एकेन्द्रियादि पर्यायों से लेकर सैनी पंचेन्द्रिय जीवों में जो समानरूप से पाया जाता है, शरीरादि परपदार्थों में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्वरूप है; उस अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की चर्चा इस अधिकार में है।

पाँचवें अधिकार से गृहीत मिथ्यात्व की चर्चा आरंभ होती है; जो सातवें अधिकार तक चलती है। पाँचवें अधिकार में सर्वप्रथम जैनेतर मतों की समीक्षा की गयी है। इसके उपरान्त जैनदर्शन का अन्य दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें कहा गया है कि जैनदर्शन मूलत: वीतरागी दर्शन है; जबकि अन्य दर्शनों में शुभराग को ही मुख्यत: धर्म स्वीकार किया गया है। अन्त में जैन व जैनेतर ग्रंथों के आधार पर जैनदर्शन की प्राचीनता सिद्ध की गयी है।

इसी अधिकार में श्वेताम्बर मत एवं स्थानकवासी सम्प्रदाय के संदर्भ में चर्चा की गई है।

छठवें अधिकार में उन दिगम्बर जैनों के गृहीत मिथ्यात्व की चर्चा है; जो लोग दिगम्बर कुल में पैदा होकर गौरवान्वित हैं, दिगम्बर धर्म के विरोध में एक शब्द भी सुनने को तैयार नहीं हैं, उसके नाम पर लड़ने-मरने को भी तैयार हैं। इतने कट्टर होने पर भी उनमें कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की आराधना किस रूप में पाई जाती है – यहाँ इसका दिग्दर्शन किया गया है।

अब इस सातवें अधिकार में उन दिगम्बर जैनों की चर्चा कर रहे हैं कि जो शास्त्राभ्यास करते हैं और कुदेव, कुगुरु और कुधर्म के सेवन से पूर्णत: विरक्त हैं। वे लोग भी नयों का स्वरूप नहीं समझ पाने के कारण गृहीत मिथ्यात्व का सेवन किसप्रकार करते हैं – यहाँ यह बताया जा रहा है।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि कुदेव, कुगुरु और कुशास्त्र या कुधर्म के निमित्त से तो गृहीत मिथ्यात्व हो सकता है; परन्तु सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के उपासक होने पर भी गृहीत मिथ्यात्व कैसे रह सकता है ?

यहाँ इसी बात को समझाया जा रहा है कि बाह्य में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के उपासक होने पर भी **नयज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण जिनागम के मर्म को न समझ पाने से ही ऐसा अनर्थ होता है।**

इस अधिकार में जो कुछ भी कहा गया है; वह सब दिगम्बर जैन स्वाध्यायी लोगों अथवा पण्डितों में पाये जानेवाले अज्ञान के संदर्भ में ही कहा गया है। पण्डितजी इस अधिकार की पहली पंक्ति में ही लिखते हैं कि **जो जीव जैन हैं, जिन आज्ञा को मानते हैं; उनके भी मिथ्यात्व रहता है – अब उसका वर्णन करते हैं; क्योंकि इस मिथ्यात्व बैरी का अंश भी बुरा है; अत: सूक्ष्म मिथ्यात्व भी त्यागने योग्य है।**

ध्यान रहे, यह निरूपण उन जैनियों का है, जो जिन आज्ञा को सच्चे दिल से स्वीकार करते हैं, मानते हैं। यह बात तो स्पष्ट ही है कि जिन आज्ञा मानना, जिन आज्ञा को जाने बिना संभव नहीं है।

तात्पर्य यह है कि वे लोग जिन आज्ञा को जानते भी हैं, उसे पूरी निष्ठा के साथ स्वीकार भी करते हैं, मानते भी हैं; तथा अपनी समझ के अनुसार, शक्ति के अनुसार उसका पालन भी करते हैं; किन्तु नय विभाग से अपरिचित होने के कारण उनके भी कुछ ऐसी भूलें रह जाती हैं कि जिसके कारण उनके भी सूक्ष्म मिथ्यात्व बना रहता है।

आज के कुछ जैनियों को तो जिनवचनों में भी शंका होने लगी है। आलू जमीकंद में अनन्त जीव होते हैं – इसमें भी कुछ लोग प्रश्नचिह्न लगाने लगे हैं; ऐसे लोगों की तो यहाँ बात ही नहीं है।

यहाँ तो उन लोगों की चर्चा है; जो न केवल जिनागम से भलीभाँति परिचित हैं; अपितु उसमें पूरी श्रद्धा रखते हैं, तदनुसार आचरण भी करते हैं। उनसे भी जो भूलें होती, उनके भी जो सूक्ष्म मिथ्यात्व पाया जाता है; उसकी ही यहाँ चर्चा है। **(क्रमश:)**

अरे, भाई ! हम सभी दिगम्बर जैन तेरापंथी हैं..

(श्री अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल से अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अखिल बंसल ने दिनाँक २ मार्च, २०१० को जयपुर में कुछ खास बातचीत की, जिसे पाठकों के ज्ञानार्थ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।)

जैनपथप्रदर्शक के ऑफिस में मुम्बई से स्वर्गीय सरसेठ श्री हुकमचंदजी इन्दौर के सुपौत्र श्री जम्बूकुमारसिंहजी कासलीवाल का एक पत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें वे लिखते हैं –

''**आजकल तो पण्डित हुकमचंदजी साहिब को सारे भारतवर्ष एवं पश्चिमी देशों में जगह–जगह हीरक जयंती महोत्सव एवं विविध उपाधियों से अलंकृत किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि अपने लेखन, प्रवचन एवं अलंकरण में तो उन्होंने श्रीमान कानजीस्वामी को भी मात कर दिया है और भविष्य में अगर मुमुक्षु पंथ भारिल्ल पंथ के नाम से ही जाना जावे तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। कृपया उन्हें भी मेरा सादर जय जिनेन्द्र ज्ञात हो।**''

उक्त संदर्भ में जब हमने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल से बात की तो उन्होंने कहा –

''आध्यात्मिकसत्पुरुष **पूज्य श्रीकानजीस्वामी हमारे गुरु हैं और जो कुछ तत्त्वज्ञान आज हमारे पास है, वह सब हमने उन्हीं से सीखा है। भगवान महावीर की वाणी का रहस्य समझने की कुंजी हमें उन्हीं से प्राप्त हुई है। हमारी समस्त उपलब्धियों के मूल में वे ही हैं। उन्हें मात देने का तो विकल्प भी हमें कभी नहीं आया और न कभी आ सकता है।**

हाँ, यह अवश्य है कि हमने उनके काम को ही आगे बढाने के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

रही बात भारिल्ल पंथ की; इसके संबंध में हमारा कहना है कि **न तो कानजी पंथ नामक कोई पंथ है और न मुमुक्षु पंथ के नाम से भी कोई पंथ है। पूज्य श्री कानजीस्वामी एवं हम सहित उनके सभी अनुयायी मुमुक्षु भाई आचार्य कुन्दकुन्द, अमृतचन्द्र, बनारसीदासजी एवं पण्डित टोडरमलजी के पंथ के अवश्य हैं; जिन्हें दिगम्बरों में तेरापंथ कहा जाता है।** अरे, भाई ! हम सभी दिगम्बर जैन तेरापंथी हैं।''

जब मैंने यह कहा कि – ''आप कुछ भी कहें, पर न केवल मुमुक्षु समाज में, अपितु सम्पूर्ण जैन समाज में जिस जोरदार तरीके से आपका हीरक जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है, वह आपकी लोकप्रियता एवं आपके द्वारा किये गये कार्य के महत्व को दिखाता है तथा विश्वविद्यालयीन स्तर पर साहित्य जगत द्वारा आपका जो मूल्यांकन हो रहा है, वह भी अपने आप में बेजोड़ है।''

तब वे कहने लगे – ''हाँ, इस बात में कोई शक नहीं कि इस अवसर पर सम्पूर्ण जैन समाज ने जो वात्सल्यभाव प्रकट किया है, उसने मुझे अभिभूत अवश्य किया है। पर मेरा मानना तो यही है कि **यह वात्सल्यभाव उस तत्त्वज्ञान के प्रति है, जिसका प्रतिपादन मैं करता हूँ; उस जिनवाणी माता के प्रति है, जिसकी सेवा मुझसे भी कुछ बन पड़ी है; उन गुरुदेवश्री के प्रति है, जिनसे मुझे यह प्राप्त हुआ है।** मैं इस बात को प्राय: कहता भी रहा हूँ।

इसमें कोई शक नहीं कि यदि गुरुदेवश्री का भरपूर आशीर्वाद मुझे प्राप्त नहीं हुआ होता, समयसारादि अध्यात्मशास्त्रों का गहरा अध्ययन नहीं होता, उनके प्रचार–प्रसार का काम मुझसे नहीं हुआ होता तो वह सब कुछ भी नहीं होता, जो आज हो रहा है।''

''सम्पूर्ण जैन समाज ने अपने सद्भाव को बखूबी प्रकट किया है, पर मुमुक्षु समाज...।''

मैं अपनी बात पूरी ही न कर पाया कि वे बोल उठे –

''अरे, क्या बात करते हो ? मुमुक्षु समाज ने देश–विदेश में, गाँव–गाँव में जिसप्रकार अपने सद्भाव प्रकट किये हैं, उनकी तो विश्व में कहीं मिसाल भी न मिलेगी। अब तक ४१ नगरों में तो कार्यक्रम हो चुका है और अभी भी तांता लगा हुआ है। एक–एक नगर में भी अनेक गाँवों के लोगों ने सम्मान किया है। सबकी संख्या गिनें तो दो–तीनसौ गाँवों से ऊपर निकलेगी।''

''हाँ, यह बात तो है, पर कुछ लोगों ने अपने नाम समिति में से वापिस ले लिये थे ?

''यह सब तो तुम्हारे कारण हुआ था। वैसे तो पहले उन लोगों ने अपने नाम प्रसन्नतापूर्वक दिये थे और इस कार्य की तहेदिल से अनुमोदना भी की थी।

''मैंने तो उनसे त्यागपत्र देने की पेशकश की थी, फिर भी वे लोग..।''

''अरे, भाई ! एक बार निकल जाने के बाद दुबारा शामिल होना इतना आसान नहीं होता। कुछ भी हो, मेरे सम्बन्ध तो आज उन सभी से एकदम सामान्य हैं।''

इसका मतलब तो यह है कि आप उन लोगों से असन्तुष्ट नहीं हैं ?

क्या बात करते हो, असन्तुष्ट जैसी तो कोई बात ही नहीं है। यदि ऐसा होता तो फिर मैं उनके आमंत्रण पर गजपंथा पंचकल्याणक में, सम्मेदशिखर शिलान्यास में बाँसवाड़ा व मंगलायतन दीक्षान्त समारोह में, मुक्तागिरि ज्ञानगोष्ठी में क्यों जाता ? और वे मुझे ससम्मान बुलाते भी क्यों ?

''और महासंघ ?''

''महासंघ के पक्ष–विपक्ष में कुछ भी न कहने का मेरा संकल्प है।''

आज पूरे देश में आपको न केवल सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज, अपितु सम्पूर्ण जैन समाज चाहे वह दिगम्बर हो या श्वेताम्बर, तारणपंथी हो या बीसपंथी सभी की ओर से गाँव–गाँव में, महानगरों में और देश–विदेश में जिसप्रकार सम्मान करने की होड़ सी लगी हुई है, वह अभूतपूर्व है। मैने तो अपने जीवनकाल मे ऐसा सम्मान और किसी का होते नहीं देखा है। विरोधी लोग भी हतप्रभ से हैं। आप वास्तव में **जैन समाज में शिखर पुरुष** हैं। आप सदा ऊँचाइयों को छूते रहें – ऐसी मंगल कामना है। धन्यवाद !

– अखिल बंसल, महामंत्री, अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ

02 मई 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

देश की राजधानी दिल्ली में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

दिल्ली : यहाँ विश्वासनगर में दिनाँक 15, 16 व 18 अप्रैल, 2010 को श्री दि. जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट विश्वासनगर के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह विशाल स्तर पर अत्यंत आनंद व हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया।

मंच उद्घाटन श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर ने किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्दजी जैन भारतनगर एवं स्वागताध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन राजपुर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नसीवसिंहजी (विधायक), श्री महेन्द्रजी जैन (निगम पार्षद), श्री अमरीशजी जैन (आई.ए.एस.), श्री विमलकुमारजी जैन (मैनेजिंग ट्रस्टी-आत्मार्थी ट्रस्ट), श्री जीतूभाई सोनगढ़ आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री अजितप्रसादजी जैन के स्वागत भाषण के पश्चात् डॉ. भारिल्ल का परिचय पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली ने दिया।

विश्वासनगर ट्रस्ट एवं मुमुक्षु मण्डल दिल्ली की ओर से डॉ. भारिल्ल द्वारा जीवनभर किये गये तत्त्वप्रचार को मद्देनजर रखते हुये उन्हें 51 हजार रुपये की राशि भेंट की तथा सर्वश्री अशोकजी जैन, के.के. जैन, मंगलसेनजी, सोहनपालजी, सुशीलजी, अजितप्रसादजी, सुनीलजी, विकासजी एवं वज्रसेनजी आदि पदाधिकारियों ने तिलक, माल्यार्पण, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति आदि से उनका भावभीना अभिनन्दन किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन पण्डित विवेकजी शास्त्री ने किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का अभिनन्दन आशा जैन, प्रिया जैन, अनीता जैन, सुनीता जैन, पूनम व अनुपमा जैन ने किया।

इस अवसर पर **आत्मसाधना केन्द्र आत्मार्थी ट्रस्ट की ओर से** श्री विमलजी नीरू कैमिकल्स, श्री अजितजी, श्री पृथ्वीचंदजी, श्री आदीशजी एवं श्री नरेशजी आदि सभी ट्रस्टियों ने, **श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल दिल्लीप्रदेश की ओर से** श्रीरामजी, श्री पृथ्वीचंदजी, श्री पदमप्रसादजी एवं श्री कान्तीप्रसादजी, **अ.भा.जैन युवा फैडरेशन दिल्ली की ओर से** श्री आदीशजी, पण्डित राकेशजी शास्त्री एवं श्री वकीलचंदजी नागलोई, **अ.भा.जैन युवा फैडरेशन न्यूउस्मानपुर की ओर से** श्री ऋषभजी, श्री प्रवीणजी एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन **दिलशाद गार्डन** की ओर से श्री नीरजजी, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन **खतौली**, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन **खेकड़ा**, दि.**जैन समाज दिलशाद गार्डन** की ओर से श्री बाबूलालजी जैन, **नागलोई मंदिर** ट्रस्ट, अ. भा. विद्वत्परिषद्, दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों में मौजूद डॉ. भारिल्ल के सभी शिष्यों की ओर से श्री राकेशजी जैन, श्रुति जैन एवं ईर्या जैन ने डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल को 51000 रुपये की जो राशि भेंट की गई थी, उसे उन्होंने विश्वासनगर, दिल्ली ट्रस्ट को विक्रेता रहित सत्साहित्य विक्रय केन्द्र संचालित करने के लिये समर्पित कर दी।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राकेशजी शास्त्री, श्रीमती ममताजी, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, डॉ. अनेकांतजी जैन, श्री अशोकजी, श्री कल्पेन्द्रजी, पण्डित विवेकजी शास्त्री आदि अतिथियों एवं विद्वत्जनों ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला, जिसे सुनकर सभी श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

9 मई	औरंगाबाद	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
10 मई	सेलू	प्रवचन एवं हीरक जयंती
11 मई से 2 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 18 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व

मङ्गलायतन का गौरव

अलीगढ (उ.प्र.) : मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को अत्यल्प काल में शीघ्र उन्नति की दृष्टि से देश का सर्वश्रेष्ठ उन्नतिशील विश्वविद्यालय घोषित किया गया है। समग्र दृष्टि से देशभर के लगभग ४५० विश्वविद्यालयों में मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को १८वाँ स्थान प्राप्त हुआ है।

देशभर के सरकारी व गैरसरकारी विश्वविद्यालयों का यह सर्वेक्षण 'जी न्यूज' चैनल और सुप्रतिष्ठित समाचार पत्र 'डीएनए' ने अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डाटा अनेलेसिस कम्पनी 'इप्सोस' के माध्यम से कराया है।

इस व्यापक सर्वेक्षण में प्राध्यापकों की योग्यता और शिक्षक एवं छात्रों के बीच अनुपात की दृष्टि से मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को १४वाँ एवं शैक्षणिक वातावरण के मामले में १९वाँ स्थान प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालयों के इतिहास और उसकी प्रतिष्ठा के अवलोकन में भी मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को २० वाँ तथा प्रवेश प्रक्रिया की दृष्टि से मङ्गलायतन १७ वें स्थान पर रहा।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के चेयरमेन श्री पवनजी जैन ने इस उपलब्धि के लिये शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। विश्वविद्यालय की प्रगति जैन समाज के लिये गौरव की बात है।

प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127